

विचारों को बाईपास कैसे करें?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

विचार भावों से बनते हैं। विचार स्थूल जगत् से आते हैं। विचार पहले मन में आता है। मन स्थूल शरीर से सम्बन्धित है। हमारे विचार विधायक होने चाहिए। कार्य भी सकारात्मक होना चाहिए। विचार कार्मण शरीर तक सीमित है। शुद्ध आत्मा अशरीरी है। आत्मा और शरीर का योग बंधन है। शरीर का पूरा कार्य आत्मा की हाजिरी से होता है। आत्मा अकर्ता है। सम्पूर्ण कार्य प्रकृति का है। फैक्ट्री का मालिक फैक्ट्री में कुछ कार्य नहीं करता केवल निरीक्षण करता है। उसके निरीक्षण करने मात्र से सभी कर्मी सक्रिय हो जाते हैं। आत्मा की भी शरीर में यही स्थिति है। प्रारब्ध से अध्यवसाय बनता है। एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों में अध्यवसाय के माध्यम से संवर और निर्जरा होती है।

अवचेतन मन बहुत बड़ी फैक्ट्री है। लेश्याएं शुभ और अशुभ होती हैं। शुभ विचारों से शुभ लेश्या और अशुभ विचारों से अशुभ लेश्या का निर्माण होता है। चिन्तन, मनन और क्रियान्वयन तीन बातें प्रायः लोग करते हैं। किसी कार्य को करने के लिए चिन्तन, मनन और क्रियान्विति की आवश्यकता होती है। जैसे किसी को कारखाना लगाना है तो इस पर सर्वप्रथम चिन्तन करता है अपनी पुरी शक्ति लगाकर उसको वह क्रियान्वित करता है। उसका एक लक्ष्य होता है कि कितने समय में कार्य पूरा करना है। यदि ज्यादा समय चिन्तन और मनन में लगा दिया और क्रियान्वित न हुई तो कठिनाई होगी। किसी भी कार्य को करने के लिए नींव की मजबूती अत्यन्त आवश्यक है।

यदि नींव मजबूत रहती है तो उस पर चार-पांच मंजीला खड़ी कर दें तो भी वह मजबूत ही रहेगा। सरकार जो योजना बनाती है वह समयबद्ध होता है। प्रयास यह होता है कि कार्य को समय के अन्दर ही पूरा कर लिया जाये। काम करने के लिए समर्पित ढंग से लगना बहुत आवश्यक होता है। भारतीय ऋषि मुनियों ने अपने शरीर को प्रयोगशाला बनाकर सत्य की खोज की, सत्य का साक्षात्कार किया और परमतत्व की प्राप्ति की। युवा वर्ग के लिए यह सूत्र

ध्यातव्य हैं कि उन्हें समय को बर्बाद नहीं करना चाहिए। जिस दिशा में वे जाना चाहते हैं उसे प्राप्त करने के लिए चिन्तन, मनन और क्रियान्वयन कर उसे प्राप्त करें। शिक्षा की अनेक शाखाएं हैं। जिसने जीवन में अच्छे ढंग से शिक्षा प्राप्त की है उसको आगामी जीवन में कठिनाई नहीं होती।

शिक्षा प्राप्त करने के बाद मानव को कर्म क्षेत्र में उतरना पड़ता है। प्रायः हर विद्यार्थी प्रशासनिक सेवा अभियन्त्रिकी सेवा, चिकित्सा सेवा या कुछ लोग व्यापार आदि को अपनी जीविका का साधन बनाना चाहते हैं। इस प्रकार जीवन निर्माण के अनेक क्षेत्र हैं। जिस क्षेत्र में जिसको आगे बढ़ना हो उसके अनुरूप अध्ययन करना चाहिए और लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। जीवन में नयी-नयी परिकल्पनाओं को करके उसका समाधान ढूढ़ना चाहिए। कोई भी कार्य कठिन नहीं होता। यदि व्यक्ति परिश्रम के साथ किसी कार्य को करता है तो सफलता उसका वरन् अवश्य करती है।

जो व्यक्ति कार्य नहीं करते केवल बैठकर व्यर्थ में बातें करते रहते हैं ऐसे लोगों को सफलता प्राप्त नहीं होती। कायर लोग दूसरों के भरोसे बैठकर जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। ऐसे लोगों के सामने छोटी सी भी विघ्न बाधा आ जाये तो कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं। परिस्थितियों से संघर्ष करने की क्षमता ऐसे लोगों में नहीं होती। कड़ी मेहनत का अर्थ है सही दिशा में पुरुषार्थ करना। मेहनत के साथ लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। लक्ष्य स्पष्ट होने से उसकी प्राप्ति हो जाती है। जब लक्ष्य ही स्पष्ट नहीं रहेगा तो किया गया प्रयास लक्ष्य को प्राप्त नहीं करा सकता और किया गया परिश्रम व्यर्थ हो जाता है।

विद्यार्थी जीवन में ही अभ्यास शुरू कर देना चाहिये। विद्यार्थी जब विद्यालय में जाता है तभी से यह प्रक्रिया प्रारंभ हो जानी चाहिए। कक्षा दस तक आते-आते विद्यार्थी जागरूक हो जाता है। कुछ क्षेत्र की सेवाओं का कार्य कम परिश्रम से भी प्राप्त हो सकता है, किन्तु कुछ सेवाएं ऐसी हैं जिनको प्राप्त करने के लिए करो या मरो के मार्ग पर चलना पड़ता है। तभी जीवन में सफलता प्राप्त हो सकती है और जीवन खुशहाल रह सकता है।

संसार में जितने भी महापुरुष हुये है उनके जीवन का मूलमंत्र कड़ी मेहनत है। जन्म से कोई महान् नहीं होता, कड़े परिश्रम और मेहनत से ही कोई व्यक्ति महान् होता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उदाहरण हम सबके सामने है। एक गरीब परिवार से निकलकर के भारत जैसे देश का प्रधानमंत्री बन जाना उनके दृढ़ संकल्प शक्ति और कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। एक मजदूर भी कड़ी मेहनत करता है। एक अधिकारी भी दिनभर परिश्रम करता है। लेकिन दोनों के जीवनयापन में महान् अंतर है। अधिकारी का जीवन बड़े ही आराम से और सुखमय ढंग से व्यतीत होता है। किन्तु एक मजदूर दिनभर परिश्रम करने के बाद भी अपने पूरे परिवार का पालन पोषण सही ढंग से नहीं कर पाता। लक्ष्य के निर्धारण करने के समय दोनों में महान् अंतर रहा होगा। इसी का परिणाम है एक तो लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो गया और दूसरा लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सका। जो विचार सकारात्मक हों उन्हीं को ग्रहण करना चाहिए और जो विचार नकारात्मक हों उन्हे बाईपास कर देना चाहिए।